प्र० 2. आत्मतत्त्व के [illegible] विशेषताओं का वर्णन करें।

[illegible] (i) Continue

(i) आत्मा [illegible]

(ii) आत्म [illegible]

(iii) आत्मा नैतिकता से परे है, आत्मा न तो नैतिक है और न अनैतिक। [illegible]

(iv) आत्मा [illegible]

(v) आत्मा [illegible]

(vi) आत्म (ब्रह्म) [illegible]

अहं की विशेषताएँ (Characteristics of Ego)

(A) अहं चेतन और अचेतन दोनों है → चेतन और अचेतन होना, अहं की यह सबसे बड़ी विशेषता है। अहं का चेतन भाग बाह्य वास्तविकता के संपर्क में रहता है और अचेतन भाग अचेतन रहता है। अतः अहं को उपाहं की इच्छाएँ और बाह्य जगत की वास्तविकताएँ - दोनों का ध्यान रखना है।

(B) अहं को समय तथा वास्तविकता का ज्ञान रहता है → चूँकि अहं का चेतन भाग बाह्य वातावरण की वास्तविकताओं के संपर्क में रहता है, इसलिए इसे समय और वास्तविकता का ज्ञान रहता है। अर्थात् कौन काम कब किस स्थान और किस ढंग से किया जाना चाहिए, इसका ज्ञान अहं को रहता है। इसलिए यह वास्तविकता का ध्यान रखते हुए उपाहं की इच्छाओं की पूर्ति में सहायक होता है।

(C) अहं में तार्किक दोष नहीं पाए जाते हैं → उपाहं की इच्छाओं को संतुष्ट करने अथवा उन्हें व्यक्त करने से उत्पन्न हुए परिणामों की जानकारी अहं को रहती है। अतः वह उपाहं द्वारा प्रकट की गई इच्छाओं की पूर्ति करने में लाभ या हानि का विचार करने में समर्थ होता है और उसी के अनुसार प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इच्छाओं की पूर्ति की व्यवस्था करता है।

(D) अहं व्यक्ति और वातावरण के बीच अभियोजक का काम करता है → फ्रायड के अनुसार अहं मुख्य शासक एवं प्रबंधक के रूप में कार्य करता है। यह व्यक्ति के सभी प्रकार के व्यवहारों का वातावरण की वास्तविकताओं के आलोक में नियंत्रण और नियमन करता है। इस प्रकार यह व्यक्ति और वातावरण के बीच अभियोजक का कार्य करता है।

(E) अहं का संबंध नैतिकता से नहीं है → अहं का संबंध नैतिक, सामाजिक या सांस्कृतिक मूल्यों से नहीं रहता। अच्छा बुरा, पाप, पुण्य आदि विचारों से अहं का कोई वास्ता नहीं रहता।

मन के गत्यात्मक पहलू

Krishna Nand B.A I Hon's (3) continue

यह केवल उपयुक्त अवसर की ताक में रहता है और ज्यों ही उसे वह उपयुक्त अवसर मिलता है। अनैतिक, असामाजिक या अनैतिक कृत्य को भी करने में वह नहीं हिचकता। इस अर्थ में अहं को अवसरवादी कहा जा सकता है।

(iii) पराहं (Super Ego) मन के गत्यात्मक पहलू का तीसरा प्रभाग प्रतिनिधि पराहं है। व्यक्ति विकास के क्रम में जब सामाजिक वातावरण के संपर्क में आता है, तब सामाजिक एवं सांस्कृतिक मानदंडों, मूल्यों आदर्शों आदि को सीखता है। इस सामाजिक शिक्षण के फलस्वरूप अहं का ही एक अंश पराहं के विकसित होता है। यह आदर्शों का द्योतक होता है और सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण से पूर्णतः प्रभावित होता है।

पराहं की विशेषताएं (Characteristics of Super Ego)

(i) पराहं पूर्णतः चेतन होता है। पराहं ~~पूर्णतया~~ पूर्णतया चेतन मन का प्रतिनिधि है। इसलिए इसका निवास वातावरण की वास्तविकता में रहता है।

(ii) पराहं आदर्शों का भंडार है। पराहं को परंपरागत, रूढ़िवादी एवं विवेकी होने की संज्ञा दी जाती है। यह सामाजिक परंपराओं सांस्कृतिक मूल्यों और आदर्शों का भंडार होता है।

(c) पराहं समाजीकरण की प्रक्रिया में प्रमुख शक्ति के रूप में कार्य करता है। चूंकि पराहं का निर्माण सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों से होता है और इसमें नैतिक मूल्यों एवं आदर्शों के भंडार होते हैं। इस लिए यह व्यक्ति के सामाजिक शिक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

(d) पराहं का निर्माण समाज और संस्कृति से होता है। पराहं का समाज और संस्कृति से गहरा संबंध रहता है। वस्तुतः इसका विकास सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों रीति रिवाजों, परंपराओं आदि से ही होता है।

इदं, अहं एवं पराहं की उपर्युक्त विशेषताओं से यह स्पष्ट है कि मन के ये तीनों प्रतिनिधि परस्पर विरोधी स्वरूप के हैं।